सबके दिलों में
राम

डॉ. शिवशंकर अवस्थी

CS Scanned with CamScanner

सबके दिलों में राम

भारत के ही नहीं बल्कि हजारों वर्ष के विश्व इतिहास में अनेक महापुरुषों के चरित्र ने जनमानस को प्रभावित किया। उनमें राम का नाम प्रमुखता लिया जाता है। राम से पूर्व हमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश के साथ अनेक महर्षियों ऋषियों और अन्य देवियों के नाम मिलते हैं। इन सभी ने विश्व के मानव समुदाय को न केवल वैज्ञानिक जीवनशैली दी अपितु ज्ञान का वह भंडार दिया जिसके बल पर आज संपूर्ण विश्व के वैज्ञानिक नवीनतम अन्वेषण में व्यस्त हैं।

रामायण और रामचरितमानस दोनों ग्रंथ राम भक्तों के प्रेरणा स्रोत हैं और विद्वानों के लिए आदर्श रहे हैं, आज भी हैं एवं भविष्य में भी रहेंगे।

-प्रकाशक

डॉ. शिवशंकर अवस्थी

राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा जगत में राजनीति विज्ञान के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध पीजी डी ए वी महाविद्यालय से सेवानिवृत्त हैं। राजनीति विज्ञान के साथ-साथ हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। अंतरराष्ट्रीय संस्था ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के वर्तमान में महासचिव और इंडियन रेप्रोग्राफिक राइट्स आर्गेनाईजेशन के उपाध्यक्ष हैं। दस शैक्षणिक पुस्तकों के अतिरिक्त आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में तेरह पुस्तकों की रचना की है। अनेक पुस्तकों का संपादन किया है। 'तुम्हें क्या मालूम' आपका काव्य संग्रह है। समय-समय पर विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कथा, कविताएं इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं। आपने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किए हैं और आपके द्वारा लिखित अनेक धारावाहिक, टेलीफिल्म और वृत्तचित्र दूरदर्शन पर प्रसारित हो चुके हैं। जर्मनी, फ्रांस, सऊदी अरब सहित अनेक देशों का भ्रमण करने वाले डॉ. शिवशंकर अवस्थी हिंदी अकादमी दिल्ली सहित अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संगठनों में विभिन्न पदों पर सुशोभित हुए हैं।

-प्रकाशक

डायमंड बुक्स
www.diamondbooks.in
9 789363 185135
₹ 300
HINDI BOOKS
NEW ARRIVALS
E-book available
Follow us

Scanned with CamScanner

विषय सूची

आमुख 3

1. राम कथा और भारतीय संविधान 17
डॉ. श्याम सिंह शशि

2. रामकथा और राष्ट्रीय भावात्मक एकता 26
डॉ. हरीश अरोड़ा

3. शिला चित्रों और भित्ति चित्रों में रामायण 35
डॉ. संदीप कुमार शर्मा

4. रामचरित मानस में सामाजिक चिंतन 42
डॉ. अहिल्या मिश्र

5. ब्रज की मौखिक परंपरा से प्राप्त लोक साहित्य में राम कथा के प्रसंग............ 49
डॉ. हरिसिंह पाल

6. लोकहित में राम : जन-जन के राम.. 51
प्रो डॉ. रेखा कक्कड़

7. लोक जीवन में राम 56
पौर्णिमा राजेंद्र केरकर

8. राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य हैं 67
डॉ. के चेल्लम

9. राम के विविध रूप 73
डॉ. शैलबाला अग्रवाल

10. संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में रामकथा............................ 81
श्रुति सिन्हा

11. वर्तमान में राम की प्रासंगिकता 84
डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन

12. राम कथा और मानवीय मूल्य.. 88
श्रीमती कृष्णी वाल्के

CS Scanned with CamScanner

13. राम से बड़ा राम का नाम 93
महेंद्र शर्मा 'सूर्य'
14. रामायण और मूल्यपरक शिक्षा 97
अशोक अश्रु
15. वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक विश्लेषण 101
मीरा रायकवार मोदिनी
16. द्रविड़ भाषाओं के साहित्य में रामकथा 105
डॉ. वासुदेवन 'शेष'
17. संत काव्य में राम नाम की महिमा 112
डॉ. किरण पोपकर
18. कंबन का कुंभकर्ण 118
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
19. रामायण और रामचरितमानस में काव्य सौन्दर्य........ 131
आर श्रीदेवी श्रीनिवासन
20. भारतीय संस्कृति में राम 144
सुमन सामंत
21. रामायण के विभीषण........ 147
डॉ. सी जे प्रसन्न कुमारी
22. रामचरितमानस में लोक कल्याण भावना और जीवन आदर्श 154
डॉ. सपना तिवारी
23. वर्तमान में राम कथा की प्रासंगिकता 163
प्रभा मेहता
24. आज भी प्रासंगिक है रामकथा........ 168
परसराम डेहरिया
25. आज के युग में राम कथा की प्रासंगिकता........ 170
डॉ. सुषमा सिंह
26. आज के युग में प्रेरणादायक रामकथा........ 173
डॉ. नवल किशोर भाभड़ा

CS Scanned with CamScanner

अध्याय-18

कंबन का कुंभकर्ण

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

कंब रामायण– एक लघु परिचय:

कंब रामायण तमिल साहित्य में सबसे अधिक प्रशंसित महाकाव्य ग्रंथों में से एक है। इसके लेखक कंबर हैं।

धार्मिक महाकाव्यों में, यह वैष्णव धर्म का है। यह महाकाव्य 12वीं शताब्दी ईस्वी में, कुलोत्तुंगा चोल द्वितीय के शासनकाल के दौरान उभरा। कुछ लोग कहते हैं कि यह 9वीं शताब्दी में उभरा था। कंबर, जो चोल देश में तिरुवलुंदूर में उवाचर वंश में पैदा हुए थे, को तिरुवेनेनैल्लूर में रहने वाले सडैयप्पा वल्लल ने संरक्षण दिया था।

वाल्मीकि मुनि ने रामायण को संस्कृत में लिखा था। कंबर ने इसे तमिल संस्कृति के अनुरूप बेजोड़ तरीके से तमिल में एक महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत किया, जिसे रामायण के नाम से जाना जाता है। कंबर ने अपनी पुस्तक का नाम रामावतारम रखा।

महाकाव्य संरचना :

यह महाकाव्य छह काण्डों में विभाजित है: बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुंदर काण्ड और युद्ध काण्ड। इन छह काण्डों में 113 सर्ग हैं। कुल श्लोकों की संख्या 10,500 है।

(काण्ड - मुख्य भाग; सर्ग - उपखंड)

नाम का कारण :

इस महाकाव्य की कहानी राम के इतिहास के बारे में बताती है, इसलिए इसे रामायण कहा गया। कंबर द्वारा लिखे जाने के कारण इसे कंब रामायण कहा गया। राम + आयणम्

Scanned with CamScanner

नामक संस्कृत शब्द मिलकर रामायण बने।

महाकाव्य उद्देश्य :

मूल रूप से, धर्म और मत महाकाव्य के विषय हैं। कंब रामायण एक अद्भुत साहित्य है जो नैतिकता, संस्कृति, उद्देश्य और शासन की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है जो सभी मनुष्यों के लिए उपयोगी है।

महाकाव्य उत्कृष्टता :

यह पुस्तक राम के गुणों और विशिष्टताओं को दर्शाती है, जो इस शैली में एक स्थायी नायक हैं, जो देवत्व से उतरकर मानव अवस्था में एक मनुष्य के रूप में रहते थे। इस पुस्तक में कंबर द्वारा जोर दिए गए न्याय और धर्म पूरे मानव समाज के लिए सामान्य हैं।

महाकाव्य नायक :

व्याकरण के अनुसार, एक महाकाव्य में एक अद्वितीय नायक होना चाहिए। इस प्रकार, कंब रामायण में, राम को अद्वितीय नायक के रूप में पूजा जाता है।

वैष्णव महाकाव्य :

राम का अवतार विष्णु का मानव अवतार है। इस पुस्तक में वैष्णव धार्मिक विचार व्याप्त हैं। इसके अलावा, कंब रामायण एक ऐसा साहित्य है जो उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करता है और राम को मानव स्थिति से ऊपर उठाकर देवत्व तक ले जाता है। यह पुस्तक कई उच्च उद्देश्यों के साथ गाई जाने वाली एक धार्मिक पुस्तक के रूप में खड़ी है।

न्याय सिखाने वाला महाकाव्य:

कंब रामायण हमें बताती है कि एक व्यक्ति को केवल एक महिला से शादी करके पवित्रता के मार्ग पर चलना चाहिए, जो एकपत्नी व्रतम् - राम के माध्यम से है। यह पुस्तक बताती है कि यदि कोई दूसरे की पत्नी की इच्छा करता है, तो वह और उसका परिवार और वंश नष्ट हो जाएंगे। यह नीति कि पराई पत्नी की चाहत रखने वाला अपने कुल के साथ नष्ट हो जाता है, इस पुस्तक के माध्यम से सिखाई जाती है।

साहित्यिक उत्कृष्टता :

कंबर ने कहानी के पात्रों की प्रकृति के अनुसार, पर्यावरण के अनुरूप और तमिल संस्कृति के अनुरूप उचित छंदों (छंद = ध्वनिपूर्ण कविता) के साथ गाई है, ताकि यह पढ़ने

Scanned with CamScanner

वालों के दिलों में अच्छी तरह से दर्ज हो जाए।वी.वी.एस. अय्यर ने कहा है कि कंबर ने वाल्मीकि रामायण से भी बेहतर स्वाद वाला एक महाकाव्य बनाया है।

कंबन के काव्य महल में पिता के पुरुषार्थ, मां की ममता, शिक्षा की वीरता, पत्नी की मंगलमत्ता, बच्चों का स्नेह, मित्रता की चमक और भाई-बहन के रिश्ते की ऊंचाई, आदि का भव्य रूप परिलक्षित होते हैं।विद्वान व. सुब. माणिक्कम का कहना है कि यद्यपि कंबन का महाकाव्य वाल्मीकि की कथा पर आधारित है, फिर भी उसकी भाषा-शैली, संस्कृति, भावना और प्रेम इसे तमिल भूमि में जन्मे शाश्वत महाकाव्य के रूप में स्थापित करते हैं।इस प्रकार की विशेषताओं से युक्त कंबन के रामायण में कुम्भकर्ण के गुणों का विश्लेषण ही इस लेख का उद्देश्य है।कंबन द्वारा रचित काव्य के पात्रों में सबसे महान पात्र कुम्भकर्ण है।कंबन की काव्यात्मक कला द्वारा,कुम्भकर्ण का चरित्र, एक उच्च और आदर्श चरित्र के रूप में दर्शाया गया है।

कुंभकर्ण – एक परिचय :

काव्य जगत के कथा-चक्र में मानव स्वभाव मिट्टी के समान होता है।कवि जब इसे घुमा देता है, तो पात्र नामक मिट्टी उत्कृष्ट आकार ले लेता है। कंब रामायण में, कंबन के हाथों यह पात्र अधिक निखारा गया है। कंबन द्वारा रचित महाकाव्य के पात्रों में सबसे ऊँचा स्थान कुंभकर्ण को प्राप्त है। कंब रामायण में, कंबन की लेखनी ने इस पात्र को अधिक निखारा है। कंब रामायण में कुंभकर्ण को एक सहायक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है, जो रावण का छोटा भाई और विभीषण का बड़ा भाई है।यद्यपि कुंभकर्ण को राक्षस कुल का सदस्य बताया गया है, फिर भी वह तमिल जीवन-दर्शन के अनुसार नैतिकता और सिद्धांतों का पालन करने वाला एक महान चरित्र है।

कुंभकर्ण वध प्रकरण :

रावण, पहले दिन राम के साथ युद्ध कर लौटने के बाद, यह सोचता है कि केवल कुंभकर्ण ही राम को पराजित करने में सक्षम है। अतः वह अपने सैनिकों को उसे जगाने के लिए भेजता है। विभिन्न प्रयासों के पश्चात जब कुंभकर्ण जागता है, तो रावण उसे युद्ध के लिए जाने का आदेश देता है। इस समय, कुंभकर्ण निर्भीक होकर उसे उचित परामर्श देता है, परंतु रावण इसे अनसुना कर क्रोधित हो जाता है। बड़े भाई के क्रोध को देखते हुए, कुंभकर्ण क्षमा मांगता है और युद्ध के लिए प्रस्थान करता है।

आगे आने वाले प्रसंग :

Scanned with CamScanner

आगे हम इस कथा के प्रवाह के अनुरूप कंब रामायण में कुंभकर्ण के गुणों और चरित्र की महानता को कुछ काव्य अंशों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

आकृति की विशेषता:

कंबन के अनुपम पात्र सृजन में, हनुमान की भाँति कुंभकर्ण भी एक उत्कृष्ट सृजन है। किसी के रूप ही उनकी पहचान में अहम् भूमोका निभाती है. इसे अंग्रजी में 'फेस वैल्यू ' कहते हैं. किसी व्यक्ति के शारीरिक घठन, छवी ही उसे आंकने में जाने अनजाने में विशिष्ट तथा गहरा प्रभाव डालता है.अतः कुम्भकर्ण की आकृति कासजीव चित्रण कंबन द्वारा किया गया है.उसकी काया इतनी विशाल है कि उसे कई पर्वतों के समान बताया गया है।कंबन की साहित्यिक सौंदर्यता और अर्थपूर्ण गहराई से भरपूर पंक्तियाँ कुंभकर्ण के पर्वत के समान विशाल रूप को हमारे समक्ष सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं। यथा :

1. जैसे ही बड़े भाई रावण नेकुंभकर्ण को जगाने के लिए भेजता है तब 'कुन्ड्रिनुम उयर्न्द तोलान्'("पहाड़ से भी ऊँचे कंधों वाला") वाक्यांश का प्रयोग करते हैं। (43,48 कुंभकर्णन् वधै पड़लम्, युद्ध खांडम्)

2. रावण नेकुंभकर्ण को बुलाया, तब पर्वत के समान विशाल शरीर वाले कुंभकर्ण की"पोम पोम"जैसी गर्जना के साथ अपने भाई से मिलने के लिए आगे बढ़ने का वर्णन किया जाता है, जो उसकी भव्य काया और प्रभावशाली उपस्थिति को दर्शाता है। यथा:

"कूयिनन् नुम् मुन् ------- कुन्रु अनअ कोल्कैयां" -70 कुंभकर्णन् वधै पड़लम्, युद्ध खांडम्

3. जैसे ही कुंभकर्ण अपने भाई को देखता है, वह धरती पर गिरकर प्रणाम करता है, जिसे कंबन इस प्रकार चित्रित करते हैं कि मानो एक विशाल पर्वत भूमि पर गिरकर लेट गया हो। इसी तरह, जब रावण अपने बलशाली और गौरवशाली छोटे भाई को गले लगाता है, तो कंबन इसकी तुलना दो विशाल पर्वतों के परस्पर आलिंगन से करते हैं, जिससे कुंभकर्ण के शरीर की विशिष्टता और भव्यता हमारे समक्ष उभरकर आती है।(पद्य – 71,72 कुंभकर्णन् वधै पड़लम्, युद्ध खांडम्)

4. राम भी कुंभकर्ण की विशाल और अद्भुत काया को देखकर आश्चर्यचकित होते हैं। कंबन उनके शब्दों के माध्यम से यह पुष्टि करते हैं कि कुंभकर्ण का रूप इतना प्रभावशाली था कि शत्रु भी उसकी उपस्थिति पर विस्मित हो जाते थे।जब राम कुंभकर्ण को देखते हैं और उसके विशाल रूप का अवलोकन करते हैं, तो वे आश्चर्यचकित होकर

CS Scanned with CamScanner

कहते हैं:

5. "अगर मैं इसके एक कंधे से दूसरे कंधे तक देखना चाहूँ, तो उसमें कई दिन लग जाएँगे! यह ऐसा प्रतीत होता है मानो पृथ्वी के मध्य में स्थित मेरु पर्वत ने पैरों लगाकर चलना शुरू कर दिया हो!"(पद्य – 111, कुंभकर्णन् वधै पड़लम्, युद्ध खांडम्)

इस प्रकार, कंबन ने कई स्थानों पर प्रत्यक्ष रूप से और अन्य पात्रों के संवादों के माध्यम से कुंभकर्ण की विशालता और अद्वितीय स्वरूप का वर्णन किया है। कुंभकर्ण वध प्रकरण से पहले ही, कंबन ने हनुमान, शूर्पणखा जैसे पात्रों के माध्यम से कुंभकर्ण का परिचय प्रस्तुत कर दिया था।

सिद्धांतों की महानता: देखने में भीषण लगने पर भी कुम्भकर्ण में न्याय प्रिय, धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता,.अपने देश और भाईयों के प्रति गहरा प्यार, लगाव, जैसे नैतिक मूल्यों कूट-कूटकर भरा पड़ा है. इसे विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से कवी हमें दर्शाते है.कुम्भकर्ण के चरित्र निर्माण को निर्धारित करनेवाले प्रसंगोंको 3 शीर्षकों के अंतर्गत देने का लघु प्रयास किया गया है. यथारावण - कुंभकर्ण संवाद, विभीषण कुम्भकर्ण संवाद तथा राम कुम्भकर्ण संवाद।

रावण - कुंभकर्ण का संवाद:

“कुंरन्न कोळ्कैयान (पर्वत के समान अडिग सिद्धांतों वाला)(-70 कुंभकर्णन् वधै पड़लम्, युद्ध खांडम्)यह वाक्य केवल कुंभकर्ण की विशाल काया को ही नहीं, बल्कि उसके दृढ़ सिद्धांतों को भी प्रकट करता है। ‘रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना अनुचित है.’—यह बात कुंभकर्ण ने बिना किसी संकोच के रावण से कहने का साहस दिखाया। इसी कारण से वह"कुंरन्नअ कोळ्कैयान" (पर्वत समान नीतिपरायण) के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

कुंभकर्ण अपने भाई रावण से युद्ध की विस्तृत जानकारी लेने के बाद,रावण से यह कहा कि यदि युद्ध करना है,तो समर्पण किए बिना पूरी ताकत से लड़ना चाहिए। सीता का अपहरण एक भूल थी—

यह बात सबसे पहले कुंभकर्ण ने ही रावण के सामने कही।

कुंभकर्ण की चेतावनी :

रावण राम से युद्ध में हारकर, जो निराश होकर विलाप कर रहा था, को उसके राक्षस सेनापति महोदर ने सुझाव दिया कि कुंभकर्ण को युद्ध में भेजा जाए। रावण के आदेशानुसार

CS Scanned with CamScanner

कुंभकर्ण को उसकी गहरी नींद से जगाकर उसे युद्ध के लिए तैयार किया गया। लेकिन वह अभी भी पूरी स्थिति को ठीक से नहीं समझ पाया और पूछने लगा,

"यह सब क्यों हो रहा है? यह युद्ध किस कारण से शुरू हुआ?"उसने आश्चर्य से पूछा। - (77) रावण के उत्तर सुनते ही कुंभकर्ण की बातों में गहरी चिंता और अविश्वास झलकने लगी। उसने आश्चर्य से पूछा–"क्या अब सच में भीषण युद्ध शुरू हो गया है?क्या धर्म की रक्षा करने वाले मुनियों की आशा समाप्त हो गई? क्या देवताओं और पृथ्वी का स्वाभिमान नष्ट हो गया?क्या समय ने सच में करवट ले ली?" – (79)

फिर वह और स्पष्ट बोला –

"क्या युद्ध निश्चित हो चुका है?क्या उन शब्दों ने, जिनसे हमें यह संकट टालने की आशा थी, अपना प्रभाव खो दिया है?क्या तुमने अब भी सीता को नहीं लौटाया? क्या तुम सच में सोचते हो कि विषधारी सर्प के समान सीता की दृष्टि और राम के बाणों से बच निकलना संभव है?" – (80)

वह रावण को समझाने का प्रयास करता रहा –

"भाई, तुम इस संपूर्ण संसार को उखाड़ सकते हो। तुम इस धरती के चारों ओर एक दीवार बना सकते हो। लेकिन क्या तुम राम को हरा सकते हो? सीता का हरण जितना सरल था, क्या राम पर विजय उतनी ही सरल है? (81,83) तुमने अपने परिवार और अपने राज्य को नाश की ओर धकेल दिया। अब कोई रास्ता नहीं बचा। राम और लक्ष्मण धर्म के अवतार हैं, और हम – जो छल, पाप और झूठ से भरे हुए हैं – उनके सामने कैसे टिक सकते हैं?" (85),

"वानर समुद्र लांघ सकते हैं। सीता अब भी तुम्हारे पास कैद में है। राम ने उसी बाण से वाली का सीना चीर डाला जिससे उसने तुम्हें पराजित किया था। अब वही बाण हमारी छाती भेदने के लिए तैयार हैं।

तो तुम्हें किस चीज़ की कमी महसूस हो रही है?"(86)

कुंभकर्ण की निराशा और आक्रोश उसके शब्दों में स्पष्टतः होता है। ऐसा लगता है कि उसके मन में कहीं न कहीं यह आशा रही कि रावण सीता को लौटा देगा। लेकिन अब उसे यह स्पष्ट हो गया था कि रावण का अंत निश्चित है।

कुंभकर्ण की अंतिम सलाह :

कुंभकर्ण ने रावण को स्पष्ट रूप से समझाने की कोशिश की –

Scanned with CamScanner

"यदि तुम उद्धार चाहते हो, तो सबसे अच्छा उपाय यह है कि सीता को राम के पास लौटा दो।उनके चरणों में समर्पित हो जाओ और विभीषण के साथ मित्रता कर लो।यही एकमात्र तरीका है जिससे तुम्हारा और लंका का भविष्य सुरक्षित रह सकता है।"(88)

फिर उसने एक और विकल्प सुझाया –"यदि तुम यह नहीं कर सकते, तो कम से कम युद्ध में समझदारी दिखाओ।हमारी सेनाओं को धीरे-धीरे लड़ाई में झोंककर उन्हें बर्बाद होते देखने से बेहतर है कि हम अपनी पूरी शक्ति एक साथ संगठित करके राम पर प्रहार करें। यही बुद्धिमानी होगी।" (89)

रावण कुंबकर्ण के सुझावों क्रुद्ध होकर कुंभकर्ण का अपमान करते हुएकहने लगे – (90-93)

"क्या तू मेरा मंत्री बन बैठा है?तुझे जो कहा गया है, बस वही कर। मुझे सलाह देने की जरूरत नहीं!

अब तू डरकर कायरों की तरह बात कर रहा है और वीरता का ढोंग रच रहा है!क्या तूने भरपेट खा लिया? अब जाकर फिर से सो जा!"रावण ने स्वयं युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है। अब कुंभकर्ण के पास युद्ध के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

स्पष्ट बुद्धि और अडिग कर्तव्य परायणता:

कुंभकर्ण ने रावण की तीखी बातें सुनीं, लेकिन उसका मन विचलित नहीं हुआ। उसने अपने हाथ में त्रिशूल उठाया और सोचने लगा—धर्म का मार्ग क्या है और उसके भाई की हठधर्मिता कितनी अडिग है। वह यह भी समझ गया कि अब क्या करना उचित होगा। उसने रावण से कहा,(94,95)"मुझे क्षमा करें, लेकिन मैं आपको सच्चाई बताना चाहता हूँ।

मैं जीतकर लौटूँगा, यह मैं नहीं कह सकता। मेरी नियति मुझे युद्ध में धकेल रही है।

यदि मैं मृत्यु को प्राप्त हुआ, तो कम से कम तब तो आप सीता को लौटा देंगे। क्योंकि यदि शत्रु हमें पराजित कर देगा, तो लंका की रक्षा के लिए यह अनिवार्य हो जाएगा। "कुंभकर्ण को ज्ञात है कि इस युद्ध में उसकी मृत्यु निश्चित है। यदि युद्ध होगा, तो अंततः इंद्रजीत भी लक्ष्मण के हाथों मारा जाएगा। इसलिए उसने रावण को सचेत किया—(96)"यदि युद्ध को मेरा बलिदान रोक न सका, तो जान लीजिए कि अंततः आपका पुत्र भी वीरगति को प्राप्त करेगा।"इसके बाद उसने अपने भाई से कहा—"अब आपके पास मुझे देखने का अवसर नहीं मिलेगा। यदि मैंने कभी कोई गलती की हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें।" (98)और फिर वह युद्ध के लिए प्रस्थान किया।

कुंभकर्ण—आकृति से अधिक, हृदय की महानता का प्रतीक :

Scanned with CamScanner

इस क्षण में, कुंभकर्ण केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि अपने हृदय की महानता से ऊँचा उठने वाला नायक बन जाता है।उसकी भक्ति, उसका कर्तव्य और उसका बलिदान उसे एक अप्रतिम गरिमा प्रदान करता है।यह बलिदान उस दास के समान है जो अपने स्वामी के साथ चल रहा होता है और जब सामने एक गहरी खाई आती है, तो वह कहता है—"स्वामी, रुक जाइए। मैं पहले कूदता हूँ।अगर मैं गिरकर मर भी जाऊँ, तो कम से कम आप इस खाई में कूदने से बच जाएँगे।"कुंभकर्ण की यह निष्ठा, यह त्याग—यह लक्ष्मण के राम के प्रति प्रेम से भी बड़ा है। राम और लक्ष्मण दोनों धर्म के प्रतीक हैं, लेकिन कुंभकर्ण को अपने भाई रावणजो अधर्म के मार्ग पर चल रहा है, के प्रति निष्ठावान रहना है, वास्तव में अद्भुत है। अतःरावण का भाई बनने के लिए कितनी महानता चाहिए?सोचकर देखिए...

"ऐसे भाई के लिए, जो पूरी तरह अधर्म के मार्ग पर है, यदि कोई जानबूझकर मृत्यु को गले लगाने युद्ध में जाता है, और वह भी एक ऐसे युद्ध में जो उसे स्वीकृत नहीं,जो उसे अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है,

फिर भी वह केवल अपने भाई के प्रति निष्ठा निभाने के लिए लड़ता है,तो उसके हृदय की महानता और अपने भाई के प्रति उसकी भक्ति की प्रशंसा करना शब्दों के परे है।"

कुंभकर्ण का युद्धक्षेत्र में प्रवेश और विभीषण से संवाद :

कुंभकर्ण जब युद्धभूमि में प्रवेश करता है, तो उसकी विशालकाय आकृति को देखकर वानर सेना भयभीत हो उठती है। राम भी उसे देखकर विस्मित रह जाते हैं।राम, पास खड़े विभीषण से पूछते हैं—

"उसके एक कंधे से दूसरे कंधे तक देखने में ही कई दिन लग जाएँ!युद्ध में खड़ा यह योद्धा कौन है?"यह तो ऐसे लग रहा है मानो पैरों वाली कोई विशाल पर्वत चट्टान हो,किन्तु यह किसी युद्ध के लिए आया योद्धा नहीं प्रतीत होता!यह कौन है?"(111)कंबन विभीषण के माध्यम से कुंभकर्ण को काल के समान कहते हैं(114-120)—"यमराज के लिए भी यमराज।कुंभकर्ण वह था जिसने इंद्र के साथ युद्ध किया था। उस युद्ध में, जब इंद्र अपने ऐरावत हाथी पर बैठकर लड़ रहे थे, कुंभकर्ण ने हाथी सहित इंद्र को अपने सिर के ऊपर उठाकर घुमाया।वह भगवान शिव द्वारा दिए गए त्रिशूल का धारक था।जिस प्रकार यदि भगवान विष्णु अपनी योगनिद्रा से जागते हैं तो असुरों के लिए संकट आ जाता है, उसी प्रकार यदि कुंभकर्ण अपनी गहरी निद्रा से जागे तो देवताओं के लिए विनाश निश्चित है!"

कुंभकर्ण को धर्मात्मा और कर्तव्य पारायण के रूप मे प्रतिष्ठित करने केलिए कंबन ने

CS Scanned with CamScanner

इस नवीन उद्भावना को अपनाया है। इस के अनुसार युद्ध में पहुँचने पर, राम अपने अनुचरों की सलाह पर विभीषण को कुंभकर्ण के पास भेजते हैं ताकि वह धर्मयुक्त मार्ग अपनाकर राम के पक्ष में आ सके। लेकिन कुंभकर्ण यह कहकर इंकार कर देता है कि रावण का त्याग कर राम के साथ जाना उसके लिए धर्मसंगत नहीं होगा। वह विभीषण को शुभकामनाएँ देकर विदा कर देता है।जब कुंभकर्ण ने देखा कि विभीषण उससे मिलने आया है, तो विभीषण उसके चरणों में गिरा, तो कुंभकर्ण ने उसे उठाकर गले लगा लिया।कंबन लिखते हैं—"उसने उसे इतनी मजबूती से गले लगाया कि विभीषण का जीवन जैसे क्षीण होने लगा।"(130)

कुंभकर्ण विभीषण से कहने लगा : (130-140)

"भाई! तुम यहाँ क्यों आए? मैं तो यह सोचकर प्रसन्न था कि कम से कम तुम तो सुरक्षित हो। तुम्हारे द्वारा पुलस्त्य वंश की कीर्ति बढ़ेगी, यह सोचकर संतोष था। पर अब तुम्हें यहाँ देखकर मेरा मन विचलित हो गया।हम तो पहले से ही मृत्यु के द्वार पर खड़े हैं और उसका स्वागत कर रहे हैं। लेकिन तुम, जिसे अमृत का पान करना चाहिए, क्यों इस विष को पीने आए हो?"**

"तुम्हें ब्रह्मा का दिया हुआ अमरत्व प्राप्त है, इसलिए तुम्हें मृत्यु का भय नहीं। अब तुम राम के शरण में हो, इसलिए जन्म का भी भय नहीं। तो फिर तुम यहाँ क्यों आए?"

"जाओ! अभी इसी क्षण लौट जाओ!क्योंकि—*"यदि तुम अयोध्या के नरेश राम के शरण में जा चुके हो और वहाँ भी सुरक्षित नहीं हो सके, तो फिर हम जैसे राक्षसों की नियति निश्चित है। राम और लक्ष्मण के बाणों की वर्षा में हम सभी नष्ट हो जाएंगे।""कम से कम तुम तो जीवित रहो ताकि हमारे अंतिम संस्कार के लिए कोई बचा रहे। जाओ, लंका के राजा बनो!"*

कुंभकर्ण की बातों को सुनकर विभीषण चुप रहा। लेकिन फिर उसने अपनी बात रखी—(141-150)

"तुम स्वयं स्वीकार कर चुके हो कि रावण जो कर रहा है, वह धर्म के विपरीत है।तो फिर तुम उसी के लिए अपने प्राण क्यों न्योछावर करने जा रहे हो?क्या केवल इसलिए कि कोई दुष्कर्म करता है, उसका परिवार भी उसे सही मान लेता है? क्या धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोग भी अधर्म का समर्थन करेंगे?अगर तुम जानते हो कि यह अधर्म है, तो फिर मैं तुम्हें क्या समझाऊँ?यदि हम पवित्र मार्ग पर चलें, तो क्या हमारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी?इस

Scanned with CamScanner

अधर्म के बंधनों को तोड़ दो और मेरे साथ चलो! राम तुम्हें अपनी शरण में लेंगे।यदि राम मुझे यह राज्य प्रदान करेंगे, तो मैं इसे तुम्हें समर्पित कर दूँगा और तुम्हारे अधीन रहूँगा। बस, मेरे साथ चलो!"

कुंभकर्ण एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति है। वह धर्म के मार्ग पर ही चलना चाहता है। धर्म को पहचानना और उसके अनुसार आचरण करने की इच्छा रखना—ये दोनों गुण कुंभकर्ण और विभीषण में समान रूप से विद्यमान है। किंतु जब परिस्थितियाँ ऐसी हो गईं कि धर्म का अनुसरण करना असंभव हो गया, तो कुंभकर्ण ने रावण के साथ ही वीरगति प्राप्त करने का संकल्प लिया, जबकि विभीषण ने धर्म के पक्ष में खड़े राम का साथ देने का निर्णय लिया।संवेदनशीलता सभी में होती है, किंतु इसे व्यक्त करने के तरीके अलग-अलग होते हैं। इस सत्य का श्रेष्ठ उदाहरण कुंभकर्ण का चरित्र है।

कुंभकर्ण का उत्तर (146, 151,152,153)

"क्या कोई व्यक्ति समुद्र की दुर्गंध को समाप्त करने के लिए उसमें इत्र डालकर व्यर्थ प्रयास करेगा?"

"यदि तुम सोचते हो कि रावण को बचाया जा सकता है, तो यह असंभव है।

यदि तुम राम के विरुद्ध युद्ध लड़ोगे, तो देवता हँसेंगे, और अंततः हमारी नियति नर्क ही होगी।""इसलिए विभीषण, धर्म के मार्ग पर आओ। राम तुम्हें शरण देंगे।"(153)"राम स्वयं करुणा के सागर हैं और तुम्हें स्नेहपूर्वक अपना चुके हैं।"

लेकिन फिर कुंभकर्ण ने एक बात कही जो किसी के भी हृदय को झकझोर सकती है—

"भाई! तुम अमरत्व का वरदान प्राप्त कर चुके हो। धर्म के मार्ग पर चलने वाले तुम जैसे व्यक्ति को यह उचित ही है।पर मेरे लिए, मरना ही सबसे बड़ी प्रतिष्ठा है।"(156)"अब सोचो, विभीषण! यदि कल रावण रणभूमि में मारा जाता है, तो क्या उसके शव के पास उसके किसी भाई का शव नहीं होना चाहिए?"(158)"क्या ऐसा हो सकता है कि पूरे संसार पर शासन करने वाला योद्धा अपने ही भाइयों के बिना मारा जाए?"यह पंक्तियाँ सुनकर आँखों में आँसू आ जाते हैं।"जीवन में भाइयों के साथ जीने का सौभाग्य मिलता है,पर क्या मृत्यु में भी कोई भाई साथ दे सकता है?"(159)

कुंभकर्ण की अंतिम बात:

विभीषण ने राम, लक्ष्मण और हनुमान के सामने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।लेकिन

CS Scanned with CamScanner

अब कुंभकर्ण वही शब्द दोहरा रहा था, परंतु उसके शब्दों में पीड़ा और आत्मसम्मान है —"मैं अपने भाई के शत्रु को प्रणाम नहीं कर सकता।

मैं मृत्यु से भी नहीं डरता।मैं युद्ध के लिए जा रहा हूँ!"(160)

और यह कहकर वह रणभूमि की ओर बढ़ गया।

"जो होना है, वही होगा। हमारे बारे में चिंता मत करो,"(166)यह कहकर कुंभकर्ण ने विभीषण को गले लगाया और विदाई दी।विभीषण की आँखों से आँसू बह रहे हैं। कुंभकर्ण ने उसकी ओर देखा और कहा—

"आज से हमारे भाई होने का संबंध समाप्त हो गया।" (167)

यह शब्द सुनते ही मन भावुक हो जाता है।

कुंभकर्ण और विभीषण का यह संवाद वाल्मीकि रामायण में नहीं है।यह पूरी तरह से कंबन की गोरवमय कल्पना का परिणाम है।

कुंभकर्ण का युद्ध

जब कुंभकर्ण युद्ध के लिए निकला, तो उसे पहले से ही यह अनुभव हुआ कि वह मरने के लिए जा रहा है। फिर भी, जैसे ही युद्ध शुरू हुआ, उसने जो वीरता दिखाई, वह एक अलग लेख की मांग करती है। इसलिए, मैं इस युद्ध का संक्षिप्त वर्णन कर रहा हूँ।

कुंभकर्ण–राम का संवाद :

हनुमान, लक्ष्मण, नील, जाम्बवंत और अन्य वीरों ने भी कुंभकर्ण के साथ युद्धकर सभी को हराया। अंत में, सुग्रीव को मूर्छित कर दिया और उसे अपनी कांख में दबाकर लंका की ओर चल पड़ा। कुंभकर्ण को देखकर वानर सेना घबरा गई। इसलिए, राम ने अपने बाणों से एक दीवार खड़ी कर कुंभकर्ण का मार्ग रोक दिया।

तब कुंभकर्ण ने राम को देखकर कहा:(284,85)

"हे राम! यह मेरा सौभाग्य है कि तुम स्वयं मेरे सामने आ गए हो। अब तक मैंने देवताओं और कई अन्य योद्धाओं से युद्ध किया है,लेकिन अब इस युद्ध में मैं अपने भाई (रावण) के मन में उत्पन्न प्रेम के दुःख को दूर करूँगा।"

कुंभकर्ण की बातों से वीरता झलकती थी, लेकिन"सौभाग्य" (भाग्य) शब्द यह संकेत देता है कि वह राम से युद्ध करने के लिए मानसिक रूप से तैयार था और इसे अपना अंतिम युद्ध मान चुका था। राम ने कुंभकर्ण के माथे के दोनों ओर बाण से मारा, जिससे रक्त की धारा बहने लगी। इस बीच, मूर्छा से जागे सुग्रीव ने कुंभकर्ण के कान और नाक को अपने दाँतों से काट लिया और राम के पास लौट आए। कुंभकर्ण ने अपनी स्थिति को समझा

Scanned with CamScanner

और महसूस किया कि वह अपमानित हो गया है। देवताओं ने भी उसका मज़ाक उड़ाया, यह कहते हुए कि उसका चेहरा अब बिना नाक का हो गया है। क्रोधित होकर, उसने अपनी तलवार उठाई और हज़ारों वानरों का वध कर दिया। राम की युद्ध क्षमता से राक्षसों की सेना नष्ट हो गई, और अंत में कुंभकर्ण अकेला रह गया। उसे अकेला देखकर, राम ने कहा323,24)

"तुम अपनी पूरी सेना और समर्थन खो चुके हो, फिर भी अकेले खड़े हो। तुम विभीषण के भाई हो, इसलिए मैं तुम्हें जीवनदान देना चाहता हूँ। क्या तुम अभी लौट जाओगे और बाद में वापस आओगे, या अभी युद्ध करके मारे जाओगे? निर्णय तुम्हारा है!"राम ने कुंभकर्ण को विकल्प दिया, लेकिन कुंभकर्ण ने वीरगति को ही अपनाया।

धर्म और कर्तव्य के बीच कुंभकर्ण का संघर्ष :

जब बड़े भाई रावण ने अधर्म किया, तो कुंभकर्ण ने उसे टोका। लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि रावण को सुधारना असंभव है, तब भी उसने अपने कर्तव्य का पालन किया। न केवल उसने अपनी पूरी शक्ति से युद्ध किया, बल्कि उससे कहीं अधिक योगदान दिया।यद्यपि विभीषण और कुंभकर्ण की राहें अलग थीं, फिर भी दोनों ने धर्म और न्याय को समझा और अपने-अपने दृष्टिकोण से सही रास्ते पर चले। कुंभकर्ण ने अपना कर्तव्य निभाने के बाद भी अपने छोटे भाई की सुरक्षा और धर्म की रक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की।

कुंभकर्ण – कंबन रामायण का एक अमूल्य रत्न :

कुंभकर्ण कंबन केरामायणमें एक ऐसा पात्र है जो उसकी लेखनी में एकप्रज्वल हीरेकी तरह चमकता है। भले ही वह एक साधारण खलनायक की तरह दिखे, लेकिन कंबन जैसे महान रचनाकार की लेखनी उसे एक विशाल आयाम देती है।

पश्चात्वेदन और आत्मसम्मान:

कंबन एक महत्वपूर्ण प्रसंग को उजागर करते हैं—कुंभकर्ण की हार के बाद उसकी मानसिक स्थिति।

जब कुंभकर्ण की पकड़ से छूटकर सुग्रीव ने उसके कान और नाक को दाँतों से चबा लिया, तब एक गहरी मानसिक उथल-पुथल हुई। कंबन इसे एक छोटी-सी झलक में प्रस्तुत करते हैं:(298)

"वह आकाश में उड़ते देवताओं को देखता है,अपनी कटी हुई नाक को देखता है,
मन ही मन कहता है—'धिक्कार है! मैं इस स्थिति में कैसे आ गया?' "

CS Scanned with CamScanner

यही अपमान उसे इतनी पीड़ा देता है कि वह राम से निवेदन करता है। (357)""मैं बिना नायक के इस संसार में नहीं रहना चाहता। कृपया मेरा सिर काटकर समुद्र में फेंक दो।"

विभीषण की रक्षा करने के लिए राम से वचन लेता है और कहता है। (353-356)

"विभीषण की रक्षा करना वह तुम्हारा कर्तव्य है, विभीषण धर्मवान है। उनको अपने शरण में लेकर उनकी रक्षा करों, विभीषण को देखते ही रावण उनको मार डालेगा। अतः तुम्हारे भाई, या हनुमान या तुम उनसे अलग मत हो जाए।"

कुंभकर्ण और विभीषण ऐसे दो व्यक्ति हैं जो सद्गुण को समझने और उसके साथ खड़े रहने की इच्छा दोनों में समान मात्रा में प्राप्त है। कुंभकर्ण ने अपने परिस्थिति के अनुसार रावण के साथ गिरने और मरने का साहस किया, जहां उसे रोका नहीं जा सका। परंतु विभीषण ने रावण को छोड़ दिया और राम से जुड़ गया, जो धर्म के मार्ग पर रहा। भावना हर किसी के लिए समान है पर उसकी अभिव्यक्ति में भेद-भाव है। सेवा और कर्तव्य की भावना सेप्रेरित कुंभकर्ण, जिसने राजा रावण के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने के लिए अपने प्राण तक त्यागने का निश्चय किया तथा विभीषण के निर्णय को गलत नहीं मानता।

निष्कर्ष:

कुंभकर्ण की छवि को आमतौर पर केवल"सोनेवाले योद्धा"के रूप में प्रस्तुत किया जाता है,जबकि वास्तव में,वह एकमहान नीति पुरुष, धर्मपरायण, शत्रु की वीरता को पहचानने वाला योद्धा,अपने देश,प्रजा, कुल, परिवार के प्रति सच्ची निष्ठा रखने वाला,महान, सच्चे कर्तव्यनिष्ठ, वीरहैं।कुंभकर्ण जैसे पात्र को केवल उसकी निद्रा के कारण याद रखना,उसकी महानता को अनदेखा करना है।कुंभकर्ण इस सिद्धांत कासर्वोत्तम उदाहरणहै। चर्चित प्रसंगों के आधार पर अगर लोग कुंभकर्ण के बारे में गहराई से जानने लगें, यह निर्णय हम अवश्य लेंगे कि यदि कुंभकर्ण चाहता, तो वह विभीषण की तरह राम के पक्ष में जाकर लंका का राजा भी बन सकता था।लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।उसने रावण के साथ रहना चुना,क्योंकि उसके लिएकर्तव्य, प्रेम और निष्ठा सबसे ऊपर थी।उसनेस्वेच्छा से अपने प्राण त्याग दिए, लेकिन अपने मूल्यों को नहीं छोड़ा।कुंभकर्ण का चरित्र उसकी महानता और ऊँचे आदर्शों के कारणकंब रामायण में एक सम्मानजनक स्थान रखता है।भविष्य में कुंभकर्ण की महिमा को समझा जाएगा। भावी समाज उसे केवल सोने वाले योद्धा के रूप में नहीं,बल्किधर्म, निष्ठा और बलिदान के प्रतीकके रूप में देखेगा और पूजेगा।

❐

Scanned with CamScanner